

**PEER-REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL**

***Aarhat Multidisciplinary  
International Education Research  
Journal (AMIERJ)***

***(Bi-Monthly)***

***Peer-Reviewed Journal***

***Impact factor:0.948***



**VOL - III**

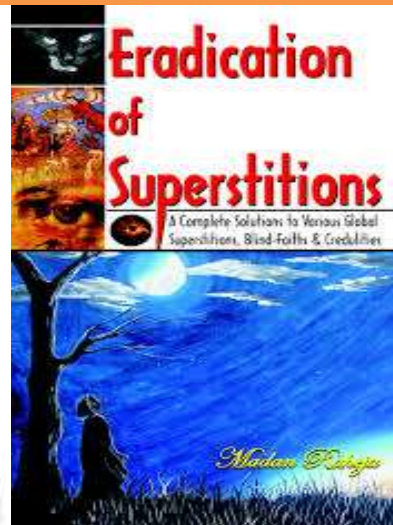
**ISSUES - I**

**FEB-MAR**

**[2014]**



The future of  
**retail**



**Chief-  
Editor:**

**U b a l e  
A m o l  
B a b a n**

**[ Editorial/Head Office: 108, Gokuldharm Society, Dr.Ambedkar chowk, Near TV Towar,Badlapur, MS**

**Con:9822307164**

## महाकवि अश्वघोषा के साहित्य में दर्शन

**Dr. Manju Gupta**

Assistant Professor

Aggarwal College, Ballabgarh

संस्कृत साहित्य विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं । वैदिक साहित्य  
। स यद्य यक्षद । कर्गः । र । द । जपुः सत्यं शिवं सुन्दरम् । स  
; प्र ग्ग । ल । द । र । द । स । न । क । स । ए । ग । क । क । ० ; ज । के । क ; . क र । फ । क । ए । ग । क । क । र  
। ज । र । ह । र । द । फ । ० ; क । द । स । फ । य । , म । इ । त । ह । ० ; ख । उ । फ । क । ज । ग । स । ग । ग । A । H । क । क । ] । द । क । फ । य । न । क । ] । H । क । ० । H । क । र ]  
माघ तथा अश्वघोषा आदि कवियों ने अपनी रचनाओं के महल का निर्माण  
बुद्ध के जीवन की कथाओं को आधार बनाकर किया है।

महाकवि अश्वघोषा भी ऐसे ही दार्शनिक महाकवि हुए जिन्होंने  
बुद्ध के जीवन की कथाओं को आधार बनाकर किया है।  
लेकर भगवान बुद्ध के लोकोत्तर चरित्र एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर  
विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं । वैदिक साहित्य  
। स यद्य यक्षद । कर्गः । र । द । जपुः सत्यं शिवं सुन्दरम् । स  
; प्र ग्ग । ल । द । र । द । स । न । क । स । ए । ग । क । क । ० ; ज । के । क ; . क र । फ । क । ए । ग । क । क । र  
। ज । र । ह । र । द । फ । ० ; क । द । स । फ । य । , म । इ । त । ह । ० ; ख । उ । फ । क । ज । ग । स । ग । ग । A । H । क । क । ] । द । क । फ । य । न । क । ] । H । क । ० । H । क । र ]  
माघ तथा अश्वघोषा आदि कवियों ने अपनी रचनाओं के महल का निर्माण  
बुद्ध के जीवन की कथाओं को आधार बनाकर किया है।

जनमानस तक पहुँचाने का प्रशंसनीय कार्य किया है जैसे तो अश्वघोषक US  
अनेकों रचनोंए लिखी है लेकिन इस 'क/क i = }kj k eδ c) pfj r  
महाकाव्य द्वारा दार्शनिक तत्वों का विवेचन प्रस्तुत कर रहा g A blUgha  
कृतियों के माध्यम से कवि ने बौद्ध दर्शन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यों की सहज  
i z kxkR; d 0; k [; k i Lrr dh gSA  
c) pfj r egkdk0; & ; g 28 l xk dk egkdk0; g\$ tks dk0; de  
oju~, d ufrd vk\$ vk/; kfred l kr vf/kd gSA ; g og fuey >juk  
g\$ tks l nō gh i k Bdi की ज्ञान पिपासा को ान्त करता आ रहा है ।  
bl egkdk0; ds i Fke i kb l xk ea Hkxoku c) ds tle l s ydj fuokZ k  
rd dh dFkk dk o.ku gSA NBs ,oa l kroa l xl ea dekj ds  
अभिनि कमण, आठवें सर्ग में अन्तः पुर विलाप, नवम में गौतम का मगध  
जाना, एकादश मे कामनिन्दा, द्वादश में गौतम ान्ति लाभ हेतु महि f  
अराड दर्शन, त्रयोदश में मार-विजय तथा चतुर्दश में बुद्धत्व की प्राप्ति होती  
gSA

bl egkdk0; के माध्यम से अश्वघो ा ने भगवान बुद्ध के दार्शनिक तत्वों पर प्रकाश डाला है । भगवान बुद्ध कें तत्वज्ञान के दो महास्तम्भ हई & egki Kk o egkd: .kk A cq) pfjr ea bu nksuka rRoka dks LFkku&LFkku ij ij i fjHkkf"kr djus dh dfo us p\$KVk dh g\$ A

### बुद्धचरित महाकाव्य में दार्शनिक तत्व%& t xr% । d kj

महाकवि अश्वघो"क ने अपने महाकाव्य बुद्धचरित में दर्शन का स्वरूप भारतीय दर्शनों से साम्यता रखते हुए दिखलाया हैं । मकाकवि ने विश्व को n%[ke; crk;k g\$ftl dkj.k jktdekj fl ) kFkZ viuk l oLo R; kx dj n%[k dk dkj.k tkuus ds fy, ou i LFkku djrs g\$ vksj vUr ea n%[kks का निरोध कर संसार को दुःख निरोध मार्ग बताते हैं । बौद्ध दर्शन n%[kokn ds fy, i fl ) g\$ a dfo us egkdk0; ea cq) ds eq[k l s t xr को नश्वर तथा वियोगात्मक कहलवाया है –

भ जगतश्च यदा ध्रुवों वियोगो ननु धर्माय वंर स्वयं वियोगः

अवशं ननु विप्रयोजयेन्मामकृतस्वार्थमतृप्तमेव मृत्युः । भ

अर्थात् जबकि विश्व से वियोग निश्चित हैं तो धर्माचर. k ds fy; s Lo; a  
iFd gks tkuk mRre g& ] D; kf d eR; ; LokFkZ dh i frZ rflr ds fcuk gh  
मुझे अवश्य पृथक कर देगी ।

Hkxoku cq) us l d kj dks vfuR; ] vl d[k] vks vukRe crk; k g& A  
यह जगत विर्तक रूपी ईधन से और मोह रूपी धुएँ से घिरा हैं तथा रो ।  
: ih vfxu से परवश होकर दग्ध हो रहा है –

ford//kutkru ekg/kekoru p A

दो ाग्नितात्विंद विश्वं विवशं परिदहयते । <sup>2</sup>

cq) us l d kj dh tyrs gq ?kj l s rnyuk dh g& A mlgkaus dgk g&  
fd ;g l d kj vfxu l s sty jgs ?kj ds l eku g& vr% 0; fDr dks

प्रेषताश्रिघ जन्म-वृद्धतो l sjfgr in dh [kkst djuh pkfg, &

b; a ykds foi nXLr Toy nfxux'gksi ee-A

vr% i na tUe t jkeR; fj Dra foeX; rke-A <sup>3</sup>

rFkkxr us bl l d kj dks vLFkj] ek; ki wkZ rFkk blnztky dh rjg  
विस्मयोत्पादक बताया है तथा दुःख जाल को काटने का अदेश दिया है –

fi z kfhk/kkua R; t ekgtkya NRrq efrLrs ; fn n[ktkye-  
cq) pfjr egkd0; ea cu/ku l Ecu/kh rF; &

सामान्यत सभी दार्शनिक अज्ञान को बन्धन का मूलकारण मानते हैं ।  
vKku ds dkj.k gh tho l kd kfjd n[kks dks >syrk gS A vKku ds  
dkj.k gh tho l kd kfjd n[kks dks >syrk gS vKku ds dkj.k gh tho  
अपने चैतन्य को भूला, नश्वर संसार को सच मानने लगता हैं । उनका  
मानना है अज्ञान, कर्म और तृ णा संसार के हेतु हैं । इन तीनों में स्थित  
jgus okyk tUrq ml l Ro ds ikj ugha tk l drk rFkk cu/ku ea f?kj k  
jgrk gS &

अज्ञानं कर्म तृ णा च ज्ञेया : संसारहेतु ० % A

fLFkrkMfLeu~f=r; s tUrqrRI Roa ukfrorZs A भ 5

egkdfo us okl uk dks Hkh cu/ku ekuk gSA okl uk gh tle dk  
dkj.k gS vkj tle gh n%[k dk dkj.k gS vr% okl uk l s eDr gqk  
tho l c n%[kka l s eDr gks tkrk gS &

okl uk tleuh chat n%[ka tleb nfguke-A

vrks okl uk; eDr% l oh%[kf}eD; rs A<sup>6</sup>

सभी दर्शनों में इन्द्रियों बन्धन का कारण होती है। इन्द्रियों स्वभावत,  
ppyy gkrh gSA fo"kyo" से लिप्त इन्द्रियों सर्प, सिंह, अग्नि, एवं 'kL=ka  
से भी भंयकर होती है । यदि इन्द्रियों वश में नहीं होती है तो जीव कभी  
l uekxZ i klr ugh dj l drk gS tS s mnfn.M~?kkM/s dk l okj 0; fDr A  
इन्द्रियों को 'ील के द्वारा ऐसे ही वश में किया जाता है जैसे एक गोप  
n.M ds }kjk xk; dks [kr ea tkus l s jksdrk gS &

फडिन्द्रियणि िलेन वि ायेभ्यो निवारय ।<sup>7</sup>

जे व्यक्ति वि ायो की कामुक djrk gS og ml ea ml h i xkj ckk  
tkrk gS tS s nks cSy , d gh tq ea gkrs gS A bl dkj.k bfUnz kw gh

fo/u dk dkj.k gsrh gsrh vr% vkyL; dks R; kxuk gh bfln; ka ij fot;  
iklr djuk gSA ftl iadkj l suk dk v/; {k l sukifr gsrk g\$ bl h iadkj  
eu] bflnz ka dk v/; {k gSA eu dks thruk gh bflnz ka ij fot; iklr  
djuk gSA

Lkukakuka ; Fkk/; {k bflnz k. kka rFkk eu%

rfLeu-ftrs rq l okf.k pk{kf.k foftrkf uoSA 8

c) pfjr egkdk0; ea eu l Ecu/kh rF; – बौद्ध दर्शन में मन को  
केन्द्र माना गया है । मनसे उत्पन्न तृ णा ही दुः [k dk dkj.k g\$ bl hfy,  
dfo dk ekuuk g\$ fd eu gh g\$ tks dHkh Hkh fLFkj ugha jgrk bl hfy,  
og ppy o pyk; eku dgk tkrk g\$ A euds dkj.k gh tho bflnz ka  
cf) ds l kfk tle&eR; q ds cu/ku ea i Mrk g\$ A vr% eu dks fLFkj , oa  
i d lu j [kuk pkfg, ftl l s og l ekf/k dh fl f) ea l gk; d gsrk g\$ vkj  
l ekf/k l s ; Or fpRr okys dks /; ku ; kx iklr gsrk g\$

l ekf/k; OrfpRrL; ?; kku; kx% i drhs A 9



c) pfj r egkdk0; eā vkRek | Ecu/kh rF; &

भारतीय दर्शन में आत्मा की सत्ता में किसी न किसी रूप में विश्वास किया गया है । लेकिन महाकवि अश्वघो ा ने बुद्ध के उपदेशों को व्यक्त djrs | e; vkRek ds vflrRo dks Lohdkj ugha fd; k gS A muds vuq kj | d kj dh | eLr oLrq vkRek jfgr gS mudk dks Lo: | ugha gS A आत्मा के स्थान पर बुद्ध ने 'kjhj /kkj.k djus rRo dks pruk dgdj | Ecks/kr fd; k gS A vr% rFkkxr आत्मा आदि के व्यर्थ प्रश्नों में न पड़कर | h/ks n[k dh ey | eL; k dks gh | gy>kuk pkgrs Fka A

Ck) pfj r egkdk0; eā cf) | Ecu/kh rF; – प्रत्येक दर्शनों में बुद्धि का अपना एक विशि"V LFkku gksrk gS D; kfd cf) gh | r& vl r- Kku&foKku eā Hkn dj mfpr&vuqpr dk fu.kz djrh gS A cf) dks दर्शन में निश्चयात्मक कह कर परिभाित किया गया है । अश्वघो ा के vuq kj vYi cf) dk tho {kf.kd thou eā vi us dks | cl s cMk ekurk gS Nks/k ugha | e>rk A cf) dks fo"k; &okl ukvka eā fylr u jgus dks

कहा है जिससे मनु य अपनी बुद्धि को सरेकxZ ij yxk l ds rFkk ije  
y{; fuokZk dks iklr dj l ds &

dkekLrq Hkksxk bfr ; Uefr% L; kn~Hkksxk u dfrPi fjx.k; ekuk% A <sup>10</sup>

**बुद्धचरित महाकाव्य में ईश्वर सम्बन्धी तथ्य –** बौद्ध धर्म में ईश्वर के  
vfLrRo dks Lohdkj ugha fd; k x; k gS A mudk ekuuk gS fd ; fn bl  
l dkj dt ईश्वर ने बनाया होता तो प्राणियों को दुःख से पीड़ित न होना  
पड़ता । प्रत्यक्ष न होने पर भी जगत का संचालन हो रहा है । यदि ईश्वर  
की इच्छा से ही प्रत्येक कार्य सम्पादित होता है तो ईश्वर ही कर्त्ता व  
ईश्वर ही भोक्ता माना जायेगा । अश्वघो ा ने तृ णा को जगर dk  
mi knu dkj .k ekuk gS &

तृ णाप्रभृति दो ाणां परिणाममिदं जगत् ।

इस प्रकार अश्वघो ा ने बौद्ध दर्शन के अनीश्वरवाद के  
fl ) kUr dks etar fd; k gS A

c) pfj r egkdk0; e3 fuokZ k l ECU/kh rF; &

बौद्ध दर्शन में मोक्ष को fuokzk ाब्द से अभिहित किया है  
A fuokzk dk vFKZ gß cƳ tkuk । निर्वाण ही ान्ति है । जिस  
प्रकार तेल के समाप्त हो जाने पर प्रदीप ान्ति को प्राप्त हो जाता है  
ml h i zdkj fuokzk dks i klr gƳk 0; fDr i je vKlun dks i klr djrk gS A  
cƳ pfjr ea fl ) kFKZ us xGR; kx ds l e; dgk gS fd ea ver i kflr ds  
fy; s?kj l s tk jgk gW&

vera i klrferkMFk ea fi i kl k A भ 11

उपर्युक्त वर्णन से इस नि क र्ि पर पहुँचा जाता है कि महाकवि  
अश्वघो"क us vius egkdk0; ka ds ek/; e l s Hkxoku cƳ ds ykd  
कल्याणकारी ान्ति, करुणा , मैत्री एवं प्राणीमात्र के प्रति अंहिसा ds  
सन्देश को सहज, सरस व सरल ौली में तथा तथागत के महामन्त्र  
l oltu fgrk; l oltu l q[kk; को संसार के समक्ष प्रतिि ठत किया है  
कवि ने अपना उद्देश्य बताते हुए कहा है कि काव्य कला को प्रदर्शित  
करने के लिए उन्होने यह काव्य नहीं लिखा अपितु लोकहित और ान्ति  
ds fy,

भ c) kuj kxknuxE; rL;

'गास्त्रं च लोकस्य हिताय गान्त्यै ।

dk0; a dra Kki f; r q futL; ]

dyka u dk0; L; p dkfonRoe~A भ

I nHkz I iph

- 1- C) pfj r 5@38
- 2- भ 16@39
- 3- भ 19@25
- 4- भ 5@45
- 5- भ 12@23
- 6- भ 20@50
- 7- भ 26@35
- 8- भ 22@40
- 9- भ 5@105



10- भ 11@36

11- भ 14@68

